



## प्रजा फाउंडेशन ने "मुंबई में स्वास्थ्य की स्थिति" पर अपनी रिपोर्ट जारी की/रिपोर्ट स्पर्श देसाई

[July 15, 2022](#)



\*प्रजा फाउंडेशन ने "मुंबई में स्वास्थ्य की स्थिति" पर अपनी रिपोर्ट जारी की\*/रिपोर्ट स्पर्श देसाई

मुंबई / रिपोर्ट स्पर्श देसाई] मुंबई की जानीमानी एनजीओ प्रजा फाउंडेशन ने मंगलवार, 12 जुलाई को " मुंबई में स्वास्थ्य की स्थिति " पर अपनी रिपोर्ट जारी की थी । रिपोर्ट में मुंबई प्राथमिक स्वास्थ्य स्थिति का विश्लेषण किया गया है और केंद्रीय एजेंसियों के मानदंडों के अनुसार बी.एम.सी की प्राथमिक स्वास्थ्य प्रणाली में कर्मियों और अवसंरचना की कमी पर प्रकाश डाला है । प्राथमिक स्वास्थ्य एक

विकेंद्रीकदृष्टिकोण प्रदान करती है। जो सार्वजनिक स्वास्थ्य का स्तर है और बदले में सरकारी अस्पतालों पर दबाव को कम करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHP) जैसे वैश्विक संगठनों के साथसाथ राष्ट्र, शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) जैसी भारत की स्वास्थ्य नीतियों में भी इस पर जौर दिया गया है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय भवन संहिता (NBC) और शहरी डिजाइन योजना निर्माण और कार्यान्वयन (UDPF) जैसे मानक बनाए हैं। जो शहरों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाको आकलन करने के लिए मानक प्रदान करते हैं। एन.बी.सी और डी.पी.एफ.आई मानदंडों में प्रति 15,000 आबादी पर एक दवाखाना निर्धारित किया गया है। इन मानदंडों के अनुसार बीएमसी की स्वास्थ्य प्रणाली में 659 औषधालयों की कमी है। विभिन्न कमियों के कारण नागरिक निजी स्वास्थ्य सेवा अंत तक जाने को मजबूर हो जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप जेब पर की लागत में वृद्धि होती है। जो उन्हें गरीबी की ओर धकेलती है। प्रजा के 2019 के सर्वेक्षण में इस बात पर जोर दिया गया था। जो एक प्रतिष्ठित अनुसंधान कमीशन किया गया था, कि सबसे कम सामाजिक आर्थिक से संबंधित 31% लोग निजी स्वास्थ्य सेवाओका उपयोग करते हैं। जबकि 76% चिकित्सा खर्चों पर अपने घरेलू खर्च का 10% से अधिक खर्च करते हैं। ऐसा प्रजा फाउंडेशन के सी.ई.ओ मिलिंद म्हास्के ने कहा। अभिकरण यह विश्लेषण 30 मार्च 2022 को प्रकाशित रिपोर्ट द्वारा समर्थित है जिसमें कहा गया है कि स्वास्थ्य सेवाओं पर घरेलू आउट - ऑफ - पॉकेट जेब खर्च, भारत में हर साल 5.5 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी में धकेल रहा है। जिसमें 17% से अधिक भारतीय परिवारों को सालाना स्वास्थ्य व्यय के भयावह स्तर का सामना करना पड़ता है।



एक प्रश्न उठता है कि क्या इन कमियों को करने के लिए बीएमसी के पास संसाधनों की कमी है। बी.एम.सी के स्वास्थ्य बजट के विश्लेषण से पता चलता है कि 2012-13 से 2022-23 तक बजट में 196% वृद्धि हुई है। जिसका अर्थ यह है कि बी.एम.सी के पास पर्याप्त बजट है हालांकि मुद्दा इसके आवंटन को प्राथमिकता

देने में निहित है। बी.एम.सी स्वास्थ्य बजट में से 73 % अस्पतालों को आवंटित किया गया है। जबकि 27 % प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं यद्यपि अस्पताल द्वितीयक और तृतीयक स्वास्थ्य का भार वहन करते हैं और अब महत्वपूर्ण बजटीय आवंटन की आवश्यकता है फिर भी बी.एम.सी की प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं मजबूत करने की दिशा में एक उचित बजट आवंटित करके चिकित्सा खर्चों पर नागरिकों के आउट - ऑफ - पॉकेट व्यय के बोझ को कम करने की आवश्यकता है। ऐसा योगेश मिश्रा, प्रमुख संवाद कार्यक्रम, प्रजा फाउंडेशन ने कहा था।

प्राथमिक स्वास्थ्य में सुधार में मुंबई को अपने सतत विकास लक्ष्यों (SDG) 2030 को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है चूंकि एस डी जी को 2015 में भारत द्वारा अपनाया गया था इसलिए हमारे पास इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केवल आठ ओर वर्ष हैं। टी.बी जैसे संचारी रोगों के लिए लक्ष्य 0 टी.बी के मामले / 1 लाख आबादी है। हालांकि 2021 में 248 टी.बी के मामले / 1 लाख आबादी दर्ज की गई थी। ऐसा मिश्रा ने कहा था। विशेष रूप से बी.एम.सी की प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना पर प्रभावी विचार - विमर्श समग्र सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में सुधार लाने में मदद कर सकता है हालांकि 2012 से 2021 तक मधुमेह और उच्च रक्तचाप पर प्रत्येक 100 में से केवल 1 प्रश्न उठाए गए थे, जबकि 2012 से 2021 तक बीएमसी औषधालयों और अस्पतालों से संबंधित कर्मियों और अवसंरचना के मुद्दों पर प्रत्येक 100 में से 2 प्रश्न पूछे गए थे। जबकि इस संबंध में स्वास्थ्य केंद्रों / अस्पतालों के नामकरण / कब्रिस्तानों के नामकरण पर अधिक सवाल उठाए गए थे। बी.एम.सी ने सभी 24 वार्डों में विकेंद्रीकॉविड - 19 ख कक्ष शुरू करके इस महामारी को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों का प्रदर्शन किया है। जिसमें वास्तविक समय के वार्ड - वार डेटा प्रबंधन हैं। यह सार्वजनिक निजी भागीदारी और नागरिक समाजों और गैर - सरकारी संगठनों के बुनियादी ढांचे के माध्यम से किया गया था। सभी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और मुंबई में वास्तविक समय और रुग्णता आंकड़ों को बनाए रखने के लिए इसी तरह की रणनीतियों का उपयोग करने की आवश्यकता है। ऐसा डॉ. मंगेश पेडनेकर, निदेशक, हीलिस्ट इंस्टीट्यूट पब्लिक हेल्थ ने कहा था। म्हस्के ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा था कि अगर मुंबई एसडीजी स्वास्थ्य लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करना चाहता है तो यह महत्वपूर्ण है कि मौतों और बीमारियों पर स्वास्थ्य आंकड़ों को प्रभावी ढंग से और वास्तविक समय में बनाए रखा जाए।

यह स्वास्थ्य योजनाओं और नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन में आँकड़ा संचालित हस्तक्षेपों को सक्षम कर सकता है। इसके अलावा प्रभावी नागरिक केंद्रित विचार - विमर्श और बजट के संसाधनपूर्ण उपयोग के साथ बुनियादी ढांचे और मानव संसाधनों का उचित आवंटन सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से एक बड़ी आबादी और कम सामाजिक - आर्थिक वर्गों को पूरा करने वाले वार्डों में। यह बीएमसी की प्राथमिक स्वास्थ्य को प्रभावी ढंग से मजबूत कर सकता है और बदले में नागरिकों को उचित देखभाल और उपचार प्रदान करने के लिए इन सुविधा पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

Link: [https://metrocitypost1.blogspot.com/2022/07/blog-post\\_65.html](https://metrocitypost1.blogspot.com/2022/07/blog-post_65.html)